v/;k; & lIre

lhek;sa ,oa lq>ko

शोध कार्य कुछ लक्ष्य सीमाओं से बाध्य होता है। शोध से संबंधित सुझावों का उदय लक्ष्य और सीमाओं को पूरा करके होता है। शोध कार्य एक निश्चित दिशा तथा निश्चित समय एवं शक्ति व कार्य प्रणाली तक विश्वस्त निष्कर्षो की प्राप्ति हेतु शोध को एक व्यवस्थित ढांचे में तैयार करने हेतु विवश करती है। फलस्वरूप शोधार्थी को अनेक कारकों को नियन्त्रित करना प्रस्तुत शोध कार्य तथा शेध अवधिमें प्राप्त विभिन्न समस्याओं के आंकलन तथा अनुीावों के आधार पर निम्नलिखित सुझावों की पृष्ठभूमि तैयार की गई है।

1. प्रस्तु शोध में शोधार्थी द्वारा सभी आय वर्ग के व्यक्तियों को रखा गया है तथा आय के प्रभाव को नियमित चर के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

2. इसके अलावा किशोर–बालक–बालिकाओं तथा विभिन्न क्षेत्र में कार्य करने वाले मजदूर वर्ग, ग्रमीण अंचल में रहने वाले लोगों की पृष्ठभूमि भी शोध का विषय हो सकती है।

3. शाधार्थी द्वारा किसी विशेष संदर्भ में रंग प्राथमिकता का वर्णन न करके व्यवहारिकता को नकारा गया है। जबकि चयनकर्ता भ्रमित होता है कि यह किस विषय में पूछा जा रहा है। जैसे– परिधान में, गृह सज्जा में, प्रकृति में, अन्य

4. वास्तु शास्त्र का रंगों पर प्रभाव विशेष रंग के प्रति लगाव होना इस तरह का अध्ययन भी रोचक शोध विषय हो सकता है।

5. शोधार्थी द्वारा भिन्न िीन्न व्यक्तित्व को शामिल किया गया परन्तु किसी Psycic पेसेन्ट की दृष्टिकोण से या मरीज के नजरिये से रंगों की प्राथमिकता

में सर्वथा भिन्नता पाई जायेगी। अतः ऐसे विषयों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

6. किसी भी व्यक्ति का किसी विशेष प्रकार के रंगों के प्रति विशेष लगाव भी शोध का विषय हो सकता है।

7. प्रकृति में बिखरे भिन्न रंग जिनका नाम अभी तक वैज्ञानिक स्पष्ट नहीं कर पाये हैं शोध का विषय बन सकते हैं।

8. वृद्वावस्था में रंग प्राथमिकता को ज्ञात कर शोध का रूचि विषय में व्यक्ति हो सकता है।

को ज्ञात कर उनके जीवन को रूचिप्रद बनाने की दिशा में सक्षम कदम उठाया जा सकता है।

0;ogkfjd mikns;rk

शोध की व्यवहारिक उपादेयता किसी भी शोध का वह व्यवहारिक पक्ष है। जिसके आधार पर एक तकनीकी क्लिष्ट शोध एक सरल सामाजिक उपयोगी पक्ष में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार शोध कार्य न केवल उद्देश्यों को परिपूर्ण करता है। वरन् जनमानस के लिये सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होकर अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का वहन भी करता है।

प्रस्तुत शोध कार्य विभिन्न आयु, लिंग व जन्म क्रम के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता पर उनके व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन करना है अतः शोधकर्ता अपनी व्यवहारिक उपादेयता का प्रारंभ अपने उत्तरदाताओं से करता है।

efgykvksa ds fy;s

बात अपनी पसंद की हो या पति के कपड़े का रंग चयन करने की अपना बच्चों को पसंद की महिला का चयन प्रक्रिया में अहम् भूमिका रहती है। अतः

शोध की व्यवहारिक उपादेयता महिलाओं के लिये सर्वाधिक हैं जिससे वह अपने घर व सदस्यों को सुन्दर व सुरूचि पूर्ण बना सकती है।

क्रेता के लिये

जब व्यक्ति कुछ वस्त्र खरीदने दुकान पर जाता है तो उसके दिमाग में कई प्रश्न चलते है। किसके लिये, किस अवसर पर, किस आयु का है। क्या पसंद कता है। आदि इस तरह वह व्यक्तित्व के अनुसार कपड़े का रंग चयनित करता है और उसे उस कसौटी पर रखता है। जहां वह कपड़े का उपयोग करना चाहता हो। अतः क्रेता का शोध विषय से गहरा संबंध है।

मनोवैज्ञानिक के लिये

प्रस्तुत शोध व्यक्तित्व से संबंधित है जिसमें कि विभिन्न व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता क्या होगी। इस कारण मनोवैज्ञानिक अपने ज्ञान में बढ़ोत्तरी कर पायेगें भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व क्या कारण है जो एक ही रंग पसंद नहीं करते। अतः मनोवैज्ञानिक रूप से रंगों की पसंद का सम्बन्ध व्यक्तित्व के लिये रहता है।

वस्त्र निर्माताओं के लिये

वस्त्र निर्माता वस्त्रों का निर्माण फैशन से प्रभावित होकर करते हैं और भरसक प्रयास करते हैं कि जो वह बनाये समाज में प्रचलित हो जाये। अतः शोध विषय उनको कार्य में सहायक सिद्ध होगा ताकि वस्त्रों के निर्माण में रंग के संतुलन का ब्यान रखा जा सके इसी प्रकार वह निर्माण कार्य को सफल बनाता है।

वैज्ञानिकों के लिये –

वैज्ञानिक नित नयी खोज कर उनका परिणाम समाज के सामने लाते हैं। अतः रंग प्राथमिकता व्यक्तित्व से किस प्रकार प्रमाणित होती है यह भी वैज्ञानिकों के लिये एक उपयुक्त विषय हो सकता है।

’kks/kdrkZvksa ds fy;s &

नवीन शोध कर्ता जो कि गृह प्रबंध के विद्यार्थी या गृह विज्ञान से संबंधित है। वह इस विषय से संबंधित शोध कार्य को कर सकते हैं जो कि प्रस्तुत शोध की सीमायें रही हैं और अपना ज्ञात अर्जन कर समाज व देश का मार्गदर्शन कर सकते हैं

foØsrk ds fy;s

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षानुसार विभिन्न आयु, लिंग व जन्म क्रम के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में भिन्नता पायी है यह भिन्नता विक्रेता के लिये एक चुनौती बन जाती है और उपयोगिता भी, क्योंकि व्यक्ति के व्यक्तित्व के सामने आने पर ही वस्त्र विक्रेता उसको परिधान दिखाते है या बेचने का प्रयास करते हैं। अतः प्रस्तुत शोध का अध्ययन कर विक्रेता अपने विक्रय कार्य को शक्तिशाली बना सकता है।

●●●